मदद की प्रेरणा

मुहम्मद अज़हर मदनी

अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

क्यामत के दिन अल्लाह तआला एक व्यक्ति से पूछेगा ''ऐ आदम के बेटे! मैंने तुझ से भोजन (खाना) मांगा तो तुम ने मुझे नहीं खिलाया, यह व्यक्ति कहेगा ''ऐ अल्लाह! तू सब लोगों को पालने वाला है मैं तुझे कैसे खिलाता? अल्लाह तआला फरमायेगा ''क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरे अमुक बन्दे ने तुझ से खाना मांगा था लेकिन तूने उसको खना नहीं खिलाया अगर तू उसे खान खिलाता तो इसका पुण्य मेरे पास पाता। इसी तरह दूसरे व्यक्ति से अल्लाह तआला कहेगा ''मैंने तुझ से पानी मांगा तो तुमने मुझे पानी नहीं पिलायाः वह व्यक्ति कहेगा कि ऐ अल्लाह तू तो पूरे संसार का पालनहार है मैं तुझे कैसे पानी पिलाता? अल्लाह तआला फरमायेगा ''मेरे अमुक बन्दे ने तुझसे पानी मांगा लेकिन तुम ने उसे पानी नहीं पिलाया अगर उसे पानी पिलाता तो इसका मेरे पास पुण्य पाता। (सहीह मुस्लिम)

इस दुनिया में अल्लाह ने किसी को मालदार बनाया है और किसी को गरीब, दोनों की आज़माइश है। अल्लाह ने जिस को माल व दौलत दी है उसकी आज़माइश इस एतबार से है कि अल्लाह तआला देखना चाहता है कि मेरा यह मालदार बन्दा मेरी दी हुई दौलत व नेमत को कहां कहां और किन किन लोगों पर खर्च करता है, अगर मालदार बन्दा अल्लाह की दी हुई दौलत को जरूरतमन्दों, गरीबों में खर्च करता है तो फिर ऐसा मालदार व्यक्ति अल्लाह की आज़माइश में कामयाब है शर्त यह है कि दिखावा न हो। इसी तरह से गरीब की भी आजमाइश होती है, अल्लाह तआला यह परीक्षा लेना चाहता है कि मेरा बन्दा गरीब होने के बावजूद वह मेरा कितना शुक्रिया अदा करता है कहीं ऐसा तो नहीं कि गरीबी से परेशान होकर मेरी नाशुकरी तो नहीं कर रहा है अगर परेशानी की हालत में भी वह अल्लाह का शुक्रिया अदा करता है तो वह परीक्षा में कामयाब है।

इस हदीस में यह प्रेरणा और शिक्षा दी गई है कि समाज में जो गरीब ज़रूरत मन्द हैं, मालदार लोगों की यह जिम्मेदारी बनती है कि उनका ख्याल रखें, कोई एलाज से महरूम न रहे, कोई साफ पानी के लिये न तरसे, खाने के बगैर न सोये सर्दी के दिनों में गर्म कपड़ों से वंचित न रहे।

आज गरीबी की जो स्थिति है वह किसी से छिपी नहीं है, ऐसे में ज़रूरी है कि मालदार लोग समाज के ज़रूरत मन्दों का हर एतबार से मदद करें, उनके आड़े वक़्त में काम आयें, ऐसे लोगों को भी ढूंढ कर मदद करें जो लज्जा में किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते हैं। उपर्युक्त हदीस में ज़रूरत मन्द बन्दों की मदद की प्रेरणा और शिक्षा दी गई है। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सभी को समाज के ज़रूरत मन्दों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करने और उनको समाजी व आर्थिक एतबार से मजबूर करने की क्षमता दे।

मासिक

इसलाहे समाज

जुलाई 2024 वर्ष 35 अंक 7

मुहर्रमुल हराम 1446

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- ❑ वार्षिक राशि 100 रुपये
- ❑ प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, **A-145** गली न० **8** चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-**53** से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-**6** से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	मदद की प्रेरणा	2
2.	कामयाबी के लिये निःस्वार्थाता ज़रूरी है	4
3.	अल्लाह को हर्गिज़ न भूलें	5
4.	तक़्वा का अर्थ	09
5.	अफ़्वाह से बचने का तरीक़ा	10
6.	२०वां आल इंडिया मुसाबक़ा क़ुरआन करीम	12
7.	पैग़म्बर मुहम्मद स०अ०व० के उपदेश	13
8.	पानी महान नेमत	16
9.	खाने पीने के बारे में इस्लाम के निर्देश	18
10.	प्रेस रिलीज़ (चांद दर्शन)	22
11.	पर्यावरण की शिक्षा के उद्देश्य	23
12.	तयम्मुम	23
13.	दुआ का फल	24
14.	समय का महत्व	25
15.	सोशल मीडिया का सहीह इस्तेमाल	26
16.	अपील	27
17.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

कामयाबी के लिये निःस्वार्थता ज़रूरी है

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

यह बात हर मोमिन के दृष्टिगत रहे कि स्थिर एवं ठोस कामयाबी के लिये जो भी कारनामा अंजाम दिया जाये और इसके लिये जो भी जतन किया जाये अगर इसमें निःस्वार्थता, अल्लाह से मुहबबत और दीन के प्रचार व प्रसार की भावना न हो तो इससे उम्मत, व्यक्ति और मानवता की कामायाबी की जमानत नहीं दी जा सकती, माल व दौलत इसका विकल्प नहीं हो सकता, माले गनीमत और शासन इसका कोई समाधान नहीं है और न ही शिक्षा के नाम पर अधर्म, हैवानियत और शोषण कौम की तरक्की की जमानत दे सकती है, उम्मत को यह पाठ बार बार पढ़ते रहना चाहिए। इस्लामी कलैण्डर के नये साल को याद रखना चाहिए और यह सबक दोहराते रहना चाहिए कि उम्मत की तमाम मुश्किलात बुरे हालात और मानवता के तमाम अत्याचार और अज्ञानता से मुक्ति का रास्ता न शिक्षा है, न राजनीति है न दौलत है और कुछ भी नहीं है बल्कि निःस्वार्थता, अल्लाह से लगाव और दीन की सरबुलन्दी के लिये हर प्रकार की कुर्बानी पेश करना और बेसरोसामानी की हालत में अल्लाह के कलिमे की बुलन्दी और ईमान की हिफाज़त के लिये खड़े होना है। मायूसियों के बादल मंडला रहे हों और असहाय होने के नाजुक हालात ने आ घेरा हो तो ऐसे में उम्मीद और विश्वास की रोशनी जलाने के पाठ हमें केवल हिजरत की घटनाओं से मिलेंगे।

खतरों से भरे रास्तों के लिये दीन के इन्कारी और मुश्रिक को मार्गदर्शक बनाने का चुनाव हमें यह पाठ देता है कि असामान्य हालात में बिना धार्मिक अन्तर के सबसे अधिक अनुभवी, ईमानदार, नीतिज्ञ और होशियार मजदूर पर भी भरोसा किया जा सकता है। और गंभीर हालात में उसके अनुभव से फायदा उठाया जा सकता है। क्या आप ने नहीं देखा कि अत्यंत नाजुक स्थिति में सैकड़ों सहायकों, ईमानदार मोमिनों के मौजूद होने के बावजूद अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित जैसा धर्म इन्कारी मगर अनुभवी कैसे कारगार साबित हुआ।

काश कि उम्मत हिजरत के हालात को जानती और इससे सबक हासिल करती क्योंकि हिजरत की घटना हमें यह मनोबल देती है कि हम निराशाओं के बादलों से न घबराएं बल्कि हम इस घटना से हर प्रकार का पाठ सीख कर मानवता के मंझधार में पड़ी नाव को सफलता के छोर से स्थिरता, मदद, भाईचारा निःस्वार्थता और मानवता के सम्मान की भूमिका और चरित्र साधारण हो। और हर प्रकार के नकारात्मक रूझहान को नज़रअंदाज़ करें जो दिलों में दूरी पैदा करते हैं, निराशा और मायूसी का सबब बनते हैं और जो लोगों को हमदर्दी आलोचना व टिप्पणी, जुबानी जमा खर्च और बज़ाहिर इख़्लास (निःस्वार्थता) और अपनाइयत के नाम पर गुटबाज़ी और दुश्मनी व नफ़रत पर उभारते हैं।

अल्लाह को हर्गिज़ न भूलें

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी, पटना

अल्लाह तआला को याद रखना और उसके अधिकारों को अदा करना एक मुसलमान बन्दे का कर्तव्य है उसकी बन्दगी की शान और पहचान है। इसी में दीन एवं दुनिया की भलाईयाँ, ज़िन्दगी की सुगमताएं हैं और जीवन की विसंगतियों, नाकामियों और कड़वाहटों से सुरक्षा भी। एक बुद्धिमान इन्सान सब कुछ गवारा कर सकता है और हर प्रकार के घाटे को सहन कर सकता है लेकिन वह अपने पालनहार और पूज्य को भूल जाए उसे कदापि गवारा नहीं हो सकता। जो लोग अपने पालनहार को भूल जाते हैं वह मूर्ख हैं इसलिये कि इस संसार के पालनहार ने बुद्धिमानों की खूबियाँ बयान करते हुए उनकी जो पहली खूबी बयान की है कि वह हर हाल में खड़े हों, बैठे हों, या लेटे हों अल्लाह को याद रखते हैं उसे भूल जाने का साहस नहीं करते। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''बेशक आस्मानों और जमीन को पैदा करने और रात व दिन की गर्दिश (गति) में उन अक़्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं जो खड़े और बैठे और अपने पहलू के बल लेटे हुए अल्लाह को याद करते हैं'' (सूरे आले इमरान-१६०-१६१)

और सबसे ज़्यादा बुद्धिमान एवं ज्ञानी हस्ती के बारे में अम्मां आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा गवाही देती हैं कि ''अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर हालत में अल्लाह को याद रखते थे'' (सहीह मुस्लिम ३७३) और अल्लाह को याद करते रहने की वसिय्यत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम करते थे ''तुम्हारी जुबान हमेशा अल्लाह की याद से तरो ताज़ा रहे'' (तिर्मिज़ी-३३७५)

ऐसे इन्सान के सौभाग्य का क्या कहना जिसे अल्लाह याद हो, उसके दिल की दुनिया अल्लाह की याद से आबाद हो, उसकी जुबान अल्लाह की याद से तरोताज़ा हो और वह हर क्षण अपने रब से संबन्ध को मजबूत बनाने में व्यस्त हो और यक़ीनन वह बड़ा अभाग है, किस्मत का मारा है जो अल्लाह को भूल जाए, जिस ने मां के पेट के अंधेरे में, बच्चेदानी के अंधेरे में उसे नहीं भूला, उसे जिन्दगी दी, रोज़ी दी, वीर्य के कतरे से गोश्त का लौथड़ा फिर इन्सान का ढांचा बनाया और मां के पेट से बाहर निकाला। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और अल्लाह तआला ने जब तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से निकाला तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे और उसने तुम्हारे लिये कान, आखें और दिल बनाया ताकि तुम शुक्र अदा करो'' (सूरे नह्ल-७८)

पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया हैः

“वही तुम्हारी माओं के पेटों में, तीन तारीकियों (अंधेरों) में, निरन्तर चरणों से गुज़ार कर पैदा करता है” (सूरे जुमर-६)

अल्लाह को भूल जाना यह ऐसा संगीन अपराध और बुरा कर्म है जिसके बड़े बुरे परिणाम प्रकट होते हैं। यह ऐसा मर्ज़ है जो इन्सान को हलाक कर देता है और उसकी आखिरत की नय्या डिबो देता है जिससे अपमान उसका मुक़ददर बन जाता है और इन्सान सुख की तलाश में परेशान ठोकरें खाता फिरता है आइये इसके कुछ हानिकारक पहलुओं पर गौर करते हैं ताकि इससे दामन बचा कर चलने की अदा सीखें। हम अल्लाह ही से ममद मांगते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं।

१. अल्लाह को भूलने वाले अपने आप को भूल जाते हैं यह बड़ा खतरनाक पहलू है कि इन्सान अपने मक़ाम को, अपनी हैसियत को अपने फायदे को बल्कि अपने आप को भूल जाए। यह भूलना ऐसा है जिस का कोई समाधान, कोई एलाज और कोई बदल नहीं है इसी लिये अल्लाह ने चेतावनी देते हुये फरमायाः

“और तुम उनकी तरह न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें उनकी जात की तरफ से गाफिल कर दिया वही लोग फ़ासिक़ हैं” (सूरे हश्र-१६)

२. अल्लाह को भूलने वाले स्वयं के साथ अपनी मानवता की खूबी को भूल जाते हैं और मानवता को तार-तार करके हैवानों की सफ में आ जाते हैं बल्कि वह चौपायों से भी बदतर हो जाते हैं जो मानवता का बड़ा अपमान है जिस इन्सान को उसके पालनहार ने सब से बेहतरीन व सौन्दर्य माडल में पैदा किया क्षितिज में वर्चस्व दिया, संसार के बाग़ का सौन्दर्य फूल बनाया ऐसा इन्सान जो मानवता की सीमाओं को छलांग करके जानवरों की लाइन में आ जाए। ऐसे ही अपरिणामदर्शी गाफिल इन्सान के बारे में पवित्र कुरआन ने फरमायाः

“उनके दिल ऐसे हैं जिनसे समझते नहीं और उनकी आंखें ऐसी हैं जिन से देखते नहीं और उनके कान ऐसे हैं जिन से सुनते नहीं, वह बहाइम (चौपाये) के समान हैं उनसे भी ज़्यादा रास्ते से भटके हुए हैं” (सूरे आराफ-१७६)

३. अल्लाह को भूलने वाले अपने पैदा किये जाने के मकसद को भूल जाते हैं उसे यह याद नहीं रहता कि इस दुनिया में हमारे पैदा किये जाने का उददेश्य क्या है?

इस दुनिया में हर व्यक्ति अपने जीवन का एक निर्धारित एवं तय मकसद रखता है और इसी के साथ वह जीता है। एक मोची जो चौराहे पर बैठता है वह समझता है कि हमारा मक़सद जूते में पालिश लगाना है इसलिये वह बड़ी तत्परता से अपने मकसद को पूरा करता है उसे यह एहसास होता है कि अगर हम अपने मक़सद को भूल गये तो हम और हमारे बच्चे भूखे रह जायेंगे।

इस संसार की हर वस्तु अल्लाह ने एक मकसद से बनाया है और यह इन्सान यूं ही बेकार नहीं बल्कि उसके पैदा किये जाने का एक महान उददेश्य है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

“और मैं ने जिन्नों और इन्सानों को केवल इस लिये पैदा किया है कि वह मेरी इबादत करें”

(सूरे ज़ारियात आयत-५६)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या तुम यह गुमान किये बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया है और तुम हमारी तरफ लौटाए नहीं जाओगे?'' (सूरे मोमिनून-११५)

अब अगर कोई शख्स अल्लाह को भूल कर अपने पैदा किये जाने के मकसद से गाफिल होकर अल्लाह के अलावा की इबादत करने लगे, अल्लाह को छोड़ कर दूसरों से मांगना शुरू कर दे तो गोया ऐसा शख्स अपनी जिन्दगी की सहीह लाइन से दूर हो गया और इस मक़सद की अदायगी में नाकाम साबित हुआ जिस के लिये उसे दुनिया में भेजा गया है फिर अल्लाह से इस बग़ावत का जो अंजाम हो गा उसे भुगतने के लिये उसे तैयार रहना चाहिये।

४. अल्लाह को भूलने वाले अपने मां-बाप को भूल जाते हैं। अल्लाह को भूलने का खतरनाक अंजाम यह भी है कि ऐसे लोग उस महान हस्ती को भी भुला देते हैं जो सबसे बड़े उपदेशक और महान शुभचिंतक हैं और जो इस दुनिया में हमारे वजूद का जाहिरी सबब हैं। आज मां बाप और औलाद के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं और प्रचलित रिश्ते कमज़ोर और पतन का शिकार हो रहे हैं।

माँ-बाप से मुहब्बत, मां बाप से वचन निभाना और उनकी सेवा पुरानी दास्तान बनती जा रही है और इसका अहम सबब अल्लाह और उसके महान अधिकारों को भूल जाना है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने अपनी खालिस इबादत के साथ मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया हैः

''और आप के रब ने यह फैसला कर दिया है कि लोगो! तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो'' (सूरे इसरा'२३)

पवित्र कुरआन की इस आयत से अल्लाह की इबादत और मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने के बीच गहरे संबन्ध का पता चलता है और यह संकेत मिलता है कि अगर हम अपने असल माबूद (पूज्य) को भूल जाएं गे और उसकी इबादत से मुंह मोड़ लेंगे तो इसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि हम अपने वास्तविक शुभचिंतक को याद नहीं रखेंगे। मां बाप और उनके अधिकार हमें उस वक्त याद रहें गे जब हम अल्लाह का उपासक बन कर जीवन गुज़ारेंगे।

५. अल्लाह को भूलने वाले और उसके आदेशों से दूरी अपनाने वाले अपनी राहत व आराम को भूल जाते और सुकून की सांस से वंचित हो जाते हैं। क्या यह मामूली सज़ा है कि ऐसे गाफिल लोग माल व दौलत के पीछे पागल बने रहते हैं, वह पैसे हासिल करने की मशीन बन गये हैं, उसे चैन नहीं, आराम का मौक़ा नहीं, खाने पीने की फुर्सत नहीं, अल्लाह के सामने झुकने का टाइम नहीं, रिश्तेदारों, दोस्तों मित्रों से मुलाकात का वक़्त नहीं, कल्याणकारी और समाजी कामों में भाग लेने और धार्मिक सभाओं में सहभाग के लिये छुटटी नहीं, दुनिया की लालच व लोभ और हवस ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा न घर के रहे न घाट के। आखिर इस दौलत

से क्या फायदा जिससे स्वयं कोई भायदा न पहुंचे। सुख और हर्ष के क्षण से वंचित हो जाए। खाना तो अल्लाह ने दिया लेकिन उसे खाने न दिया, दौलत तो दी लेकिन संतोष की नेमत छीन ली। शरीर पर कीमती कपड़े भी दिए लेकिन दिलों में आग लगा दी, यह अल्लाह से गफलत, उससे दूरी और उसके आदेशों को छोड़ने का अंजाम है। जिस का हमें एहसास नहीं।

वाय नाकामी मता-ए-कारवां जाता रहा।

कारवां के दिल से एहसासे ज़ियां जाता रहा

अल्लह तआला ने सच फरमायाः

''और जो शख्स मेरी याद से मुंह मोड़े गा वह दुनिया में तंग हाल रहेगा और क़्यामत के दिन उसे हम अन्धा उठाएंगे।'' (सूरे तॉहा-१२४)

६. अल्लाह तआला को भूलने वालों को अल्लाह भी भुला देता है हम जानते हैं कि सबसे बड़ी कामयाबी शाश्वत आराम व राहत आखिरत (मरने के बाद वाले जीवन) का सुख व राहत है और सब से बड़ा खसारा आखिरत का खसारा है। अब इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है और इससे बड़ी मार और क्या हो सकती है कि अल्लाह किसी बन्दे को क़्यामत के दिन आख़िरत में भूल जाए, उसे याद न करे उसे दया करूणा की दृष्टि से न देखे और यह एलान फरमा देः

''आज हम तुम्हें इस तरह भूल जायें गे जिस तरह तुम ने अपने उस दिन की मुलाकात को भुला दिया था'' (सूरे जासिया-३४)

स्पष्ट है कि यह अज़ाब बुरे कर्म की सज़ा के अध्याय से है जब उसने अल्लाह को भुला दिया तो वह कैसे उस दिन उसे याद करेगा जिस दिन उसकी बादशाहत होगी। फरिश्ते, और पैगम्बर अल्लाह के सामने सफ लगाए खड़े होंगे, सब की जुबानें बन्द होंगी। अल्लाह की इजाज़त के बिना किसी को बोलने की साहस न होगी। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''जिस दिन रूहुल अमीन और अन्य फरिश्ते सफ बांधे खड़े होंगे, लोग बात नहीं करेंगे सिवाए उसके जिसे रहमान इजाज़त देगा और जो सच्ची बात कहेगा'' (सूरे नबा-३८)

उसने याद करने वाले बन्दों से वादा कर रखा हैः

''पस तुम लोग मुझे याद करो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा करो और नाशुकरी न करो'' (सूरे बक़रा-१५२)

लेख का सारांश यह है कि अल्लाह को भूल जाना घातक है। हमें चाहिए कि नमाज़, कुरआन की तिलावत, जिक्र व अज़कार के एहतमाम और कुरआन ने जिन चीज़ों और बातों से मना किया है उनसे बच करके उन बन्दों में शामिल हों जो अल्लाह को बहुत याद रखते हैं। यही कामयाबी की सबसे बड़ी कुंजी है और दुनिया व आखिरत में सफलता का रहस्य व ताज भी, यही दिल के सुकून का आजमाया हुआ नुस्खा भी है और जीवन के विभिन्न मैदानों में खुशहाली की जमानत भी और यही शैतान के हथकंडों और दीन व ईमान के लुटेरों से सुरक्षित रहने का मजबूत किला भी है और जीवन के उलझनों, गम व दर्द के भयावह छांव में हर्ष का सन्देश और मज़बूत सहारा भी।

तक़वा का अर्थ

अबू हमदान अशरफ फैजी

अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला की मुहब्बत मिल जाये तो सबसे पहले अपने आप को परहेज़गार बनाइये, अपने अन्दर परहेज़गारी पैदा कीजिये क्योंकि जो लोग अपने अन्दर परहेज़गारी (तक़वा) पैदा कर लेते हैं तो ऐसे लोगों से अल्लाह मुहब्बत करने लगता है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया और कुरआन में इस का बार बार उल्लेख आया है ''अल्लाह तआला मुत्तक़ियों से मुहब्बत रखता है।'' (सूरे तौबा-७)

पवित्र कुरआन में एक दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः ''क्यों नहीं, निःसन्देह जो शख्स अपना क़रार पूरा करे और परहेज़गारी करे, तो अल्लाह तआला भी ऐसे परहेज़गारों से मुहब्बत करता है'' (सूरे आले इमरानः७६)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह उस बन्दे से मुहब्बत करता है जो परहेज़गार बेनियाज़ और छिप कर नेकी करने वाला हो। (सहीह मुस्लिम २९६५)

हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फरमायाः तक़वा यह है कि दिल में अल्लाह से डर पैदा हो, कुरआन के मुताबिक़ अमल और कम रोज़ी पर संतोष और परलय के दिन के लिये तैयारी की जाये। (मजल्लतुल बुहूसिल इस्लामिया ५/६३९)

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह का अनुसरण किया जाए, नाफरमानी न की जाये, अल्लाह को याद रखा जाए, उसको भुलाया न जाये और अल्लाह का शुक्र अदा किया जाए और नाशुकरी न की जाये। (तफ्सीर तबरी ५/६३९)

अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आप से मुहब्बत करे तो फिर अपने दिल में तक़वा और अल्लाह से डर पैदा कीजिये और अपने लिये अल्लाह से तक़वा का सवाल करते रहिए जैसा कि सहीह मुस्लिम और इब्ने माजा वग़ैरह में इस तरह की दुआ मौजूद है जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सत्यमार्ग, परहेज़गारी, पवित्रता और किसी का मोहताज न बनने की दुआ मांगी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अधिकांश रूप से यह दुआ करते थे।

''अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल् हुदा वत तुक़ा वल अफ़ाफ़ा वल ग़िना'' अर्थात ऐ अल्लाह मैं तुम से सत्यमार्ग, परहेज़गारी, पवित्रता और किसी का मोहताज न होने की दुआ करता हूं''। (सहीह मुस्लिम २७२१ इब्ने माजा ३८३२)

अल्लाह की इबादत सत्यमार्ग पर चलना, परहेजगारी अपनाना इन्सान के जीवन का असल मक़सद भी है और परीक्षा भी है। इन्सान इन खूबियों को अपना कर अपने आप को सफल और अल्लाह का प्रिय बन्द बन सकता है।

❑ ❑ ❑

अफ़वाह से बचने का तरीक़ा

मौलाना अज़ीज़ अहमद मदनी

अफवाह फैलाना एक निंदित कार्य है अफवाह फैलाने में गीबत, झूठे आरोप, बदगुमानी, हसद, ख्यानत, कपटाचार, अपमान आदि बुराइयों का सहारा लेना पड़ता है यह सब अफवाह फैलाने का कारण बनते हैं यह किसी भी समाज को घुन की तरह चाट कर खतम कर देते हैं यही वजह है कि इस्लाम ने इन तमाम दुराचरण पर अंकुश लगाया है और एक दूसरे के बारे में अच्छा विचार रखने और सदव्यवहार करने की शिक्षा दी है। किसी की बुराई करने, झूठे आरोप लगाने, गलत विचार रखने पर रोक लगा दी है और इसे महा पाप क़रार दिया है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! बहुत बदगुमानियों से बचो यकीन मानो कि बाज़ बदगुमानियाँ पाप हैं और भेद न टटोला करो और न तुम में से कोई किसी की गीबत करे।'' (सूरे-हुजूरात-१२)

इसी तरह आपसी मतभेद, लड़ाई झगड़े, विभिन्न वर्गों और समुदाय में नफरत व दूरी की बुनियाद झूठी खबरें, अफवाहें और अप्रमाणित बातें होती हैं। जो समाज में झगड़े का सबब बन जाती हैं इसी लिये पवित्र कुरआन में मतभेदों के सभी स्रोतों को बन्द करने और बिना छान बीन और शोध व सुबूत के किसी बात और खबर को कुबूल न करने का आदेश एवं उपदेश दिया है ताकि बाद में पछताताप का सामना न करना पड़े। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ऐ मुसलमानो! अगर तुम्हें कोई फासिक़ खबर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह तहकीक़ कर लिया करो ऐसा न हो कि अज्ञानता में किसी को दुख पहुंचा दो फिर अपने किये पर पश्चाताप उठाओ। (सूरे हुजूरात-६)

इस आयत में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को बताया गया है जिस का व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तर पर अत्यंत महत्व है। हर व्यक्ति, संस्था और सरकार की यह ज़िम्मेदारी है कि उसके पास जो भी खबर या सूचना आए खास तौर से दुराचारी, पापी और फसादी किस्म के लोगों की तरफ से तो पहले इसकी छानबीन की जाए ताकि गलत फहमी में किसी के ख़िलाफ कोई कार्रवाई न हो। (अह्सनुल बयान-पृष्ठ-१४५)

इसी प्रकार समाज में बेचैनी, भय और बेइतमिनानी का बड़ा सबब अफवाह है। अफ़्वाह उड़ाना, किसी बात को बिना छानबीन और बिना सोचे समझे प्रसारित करना कुरआन की निगाह में अप्रिय कार्य है यह कपटाचारी और लापरवाह लोगों का तरीक़ा है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः जहाँ उन्हें कोई खबर अम्न की या भय की मिली उन्होंने इसे मश्हूर करना शुरु कर दिया हालांकि अगर यह लोग इसे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

के और अपने में से ऐसी बातों की तह तक पहुंचने वालों के हवाले कर देते, तो इसकी हक़ीक़त वह लोग मालूम कर लेते जो परिणाम निकालते हैं और अगर अल्लाह तआला का करूणा और उसकी दया तुम पर न होती तो गिने चुने चन्द के अलावा तुम सब शैतान के पैरोकार बन जाते।'' (सूरे निसा-८२)

कुरआन की इस आयत में यह शिक्षा दी गई है कि अगर खबर सुन कर खुद से इसको फैलाने के बजाये इसे रसूल (पैगम्बर) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या रसूल के जिम्मेदार साथियों तक पहुंचा देते तो वह इस पर विचार विमर्श करके पहले यह फैसला करते कि यह खबर सहीह है या गलत। अगर सहीह है तो इसको प्रसारित करना चाहिये या नहीं, मुसलमानों का इस खबर को जानना लाभकारी है या न जानना लाभकारी है। खबर प्रसारित करने योग्य होती तो प्रसारित करते वरना रोक देते। यह सिद्धांत साधारण हालात में बड़े महत्वपूर्ण और अत्यंत हितकारी हैं लेकिन खास हालात में तो इसकी अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है अतः सामूहिक जीवन में इस निर्देश पर अमल करना ज़रूरी है वरना सामूहिक जीवन को असीमित नुकसानात पहुंच सकते हैं जिस का निरीक्षण हम अपने सामूहिक और संगठनात्मक जीवन में कर रहे हैं और पक्षतावे के सिवा कुछ हासिल नहीं होता।

अफवाहों पर नियंत्रण पाने के लिये ज़रूरी है कि खबरों के बारे में पूरी जानकारी हासिल की जाए,

२. बिना छान बीन के खबरों को फारवर्ड न करना,

३. अफवाहों पर ध्यान न देना,

४. अफवाह पर खामूश रहना,

५. अफवाह पर गंभीरता और संतुलन बाकी रखना

६. अफवाहों का खण्डन करना

७. अफवाहा के संसाधन और माध्यम पर रोक लगाना, अफवाहों से बचने के बेहतरीन उपाय हैं।

इस्लाम धर्म ने अफवाह और निराधार खबरों के नुकसानात से बचने के लिये कुछ सिद्धांत बताए हैं अफवाहों के नुक़सानात से बचने के लिये कुछ सिद्धांत बताए हैं जिस पर अमल और उनका पालन करके अफवाहों के नुकसानात से बचा जा सकता है।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''यह बहुत बड़ी ख्यानत है कि तुम अपने भाई से कोई बात कहो और वह तुम्हें सच्चा समझे हालाँकि तुम उससे झूठ बोल रहे हो। (अबू दाऊद-४६७१)

अफवाह आम तौर पर गीबत पर आधारित होती है और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार गीबत यह है कि अपने भाई की ऐसी बात का उल्लेख दूसरों से करना जिसे वह नापसन्द करे और अगर वह बातें इसमें न पायी जायें तो उस पर बोहतान (झूठा आरोप) है। यह दोनों आदतें शरीअत अर्थात इस्लामी कानून की निगाह में निन्दित और बुरी है।

अफवाह का आधार आम तौर पर अनुमान और अन्दाज़े पर होता है। एक मुसलमान के लिये यह अत्यंत ज़रूरी है कि वह किसी बात या खबर को उसी वक़्त बयान करे जब तक उसके सहीह होने की पुष्टि न हो जाए।

ग़लत और झूठी बातों को नक़ल

करना, उसको फैलाना जिस के झूठ होने का यकीन हो नाजायज और अन्याय है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"आदमी के पापी होने के लिये यही काफी है कि वह हर सुनी सुनाई बातों को बयान करता फिरे" (सुनन अबू दाऊद ४९९२)

अविश्वसनीय बातों और अफवाहों को बयान करने के बजाये इस पर खामूशी अपनाई जाये, इसकी उपेक्षा करके अफवाह पर रोक लगाने की कोशिश की जाए। इस तरह यह अफवाह स्वयं खतम हो जाएगी।

अपमान और बदनामी की बातें, उसकी जो भी सूरतें हों, उन्हें बयान करने से बचा जाए।

किसी खबर में विरोधाभास हो तो ऐसी सूरत में उसके असल स्रोत को जानने की कोशिश करनी चाहिए ताकि सहीह मालूमात का पता लगाया जा सके।

इस समय हम लोगों की यही शान होनी चाहिये इन्हीं सिद्धांतों का अनुसरण और पालन करते हुए अफवाहों के नुकसानात से बचा जा सकता है।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस के ज़ेरे एहतमाम

20वाँ आल इंडिया मुसाबक़ा

हिफ्ज़ व तजवीद और तफसीर कुरआन करीम

दिनांक 3-4 अगस्त 2024

शनिवार-रविवार स्थानः डी-254, अहले हदीस कम्लेक्स ओखला, नई दिल्ली-25

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 25 जुलाई 2024

एक उम्मीदवार केवल एक ही श्रेणी में भाग ले सकता है फार्म मर्कज़ी जमीअत की वेब साइट www.ahlehadees.org से डाउन लोड किया जा सकता है।

अधिकृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें।

मुसाबका हिफ्ज व तजवीद व तफसीरे कुरआन कमेटी

011-23273407 Fax 011-23246613

Email.

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० के उपदेश

हज़रत मआज़ बिन जबल रजियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

❑ अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक् में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

❑ अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया जो शख्स किसी के जनाज़े में नमाज़ की अदायगी तक शामिल रहे तो उसे एक कीरात के बराबर सवाब मिलेगा। पूछा गया कि कीरात का क्या अर्थ है तो आप ने फरमायाः दो बड़े पहाड़ अर्थात जनाज़े की नमाज़ और तदफीन तक साथ रहने वाला दो बड़े पहाड़ों के बराबर सवाब लेकर वापस लौटेगा। (सहीहुल बुखारी १३२५, सहीह मुस्लिम ६४५)

❑ हज़रत अनस रजियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि आपने फरमाया क्यामत की निशानियों में से है कि इल्म उठा लिया जायेगा, जाहिलियत बढ़ जायेगी और शराब पिया जायेगा ज़िना (व्यभिचार) आम हो जायेगा। (बुखारी-मुस्लिम)

हज़रत आइशा रजियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने महल्लों में मस्जिदें बनाने उन्हें पाक साफ और खुश्बूदार रखने का हुक्म दिया है। (अबू दाऊद)

❑ जिसने अल्लाह की खुशी के लिये मस्जिद बनायी तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में वैसा ही घर बनायेगा। (बुखारी-४५०)

❑ मुहम्मद स० ने फरमायाः जब तुम्हारा गुज़र जन्नत के बागों में से हो उसके फल खाओ। हज़रत अबू हुरैरा रजिअल्लाहो अन्हो ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत के बाग कौन से हैं? तो मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि मस्जिदें हैं।

❑ मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः मोमिन की मौत के बाद उसके कर्म और अच्छे कामों से जिसका उसे सवाब मिलता है वह सात हैं। इल्म जो उसने दूसरों को सिखाया और फैलाया २. नेक लड़का ३. कुरआन मजीद, जिसका किसी को इल्मी वारिस बनाया। ४. मस्जिद जिसने बनवायी ५. घर जो मुसाफिरों के लिये बनवाया। ६. नहर ७. सदक़ा जो अपनी जिन्दगी में स्वस्थ होने की हालत में दिया। इन सात कामों का सवाब मौत के बाद भी इन्सान को मिलता रहता है।

नबी स०अ०व० ने फरमाया कि जब कब्र में सवाल होता है तो काफिर या मुनाफिक यह जवाब देता है हाय हाय मुझे मालूम नहीं मैंने लोगों को एक बात करते हुये सुना तो मैं भी इसी तरह कहता रहा इसके बाद उसे लोहे से मारा जाता है कि वह चीख उठता है उसकी

चीख पुकार को इन्सान और जिन्नातों के अलावा हर चीज़ सुनती है अगर इन्सान इस आवाज़ को सुन ले तो बेहोश हो जायेगा।(बुखारी १३८०. १३३८)

❑ रसूल स०अ०व० ने फरमायाः जुल्म और ज्यादती और रिश्ता नाता तोड़ना यह दोनों ऐसे जुर्म हैं कि अल्लाह तआला आखिरत की सजा के साथ दुनिया ही में इसकी सजा दे देता है। (तिर्मिज़ी २५११, अबू दाऊद ४९०२)

❑ रसूल स०अ०व० ने फरमाया रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है और कहता है, जो मुझे मिलाये, अल्लाह उसे अपने साथ मिलाये और जो मुझे तोड़े अल्लाह उसे अपने से तोड़े। (मुस्लिम २५५५)

❑ नबी स०अ०व० ने फरमायाः किसी मिस्कीन पर सदक़ा करना केवल सदका है और अगर यही सदका किसी गरीब रिश्तेदार पर किया जाये तो इसकी हैसियत दो गुना हो जाती है एक सदके का सवाब और दूसरे रिश्तेनातेदारी जोड़ने का सवाब। (तिर्मिज़ी ६५८)

❑ नबी स०अ०व० ने फरमायाः जो शख्स अल्लाह पर और आखिरत पर ईमान रखता हो उसे रिश्ता नाता जोड़े रहना चाहिये।

नबी स०अ०व० ने फरमायाः रिश्ता नाता जोड़ने से खानदान में मुहब्बत बढ़ती है माल में बढ़ोतरी होती है और उमर में बरकत होती है। (तिर्मिज़ी)

❑ तुम में से जो शख्स कोई बुराई देखे तो उसको अपने हाथ से खत्म करे अगर इसकी ताकत न हो तो जुबान से दूर करने का प्रयास करे, और अगर इसकी भी ताकत न हो तो दिल में इसको बुरा जाने और यह ईमान की सबसे कमज़ोर अलामत है। (मुस्लिम)

❑ मजलूम की बददुआ से बचो इसलिये कि इसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं। (बुखारी)

❑ अगर किसी ने अपने भाई को अपमानित (रूस्वा) किया है, उसके माल व दौलत या किसी और चीज़ से कुछ लिया है या किसी के साथ कोई जुल्म किया है तो दुनिया ही में उसको मआफ करा ले और उसकी भरपाई कर दे वर्ना क्यामत के दिन जब दीनार व दिहर्म न होंगे ताकि किसी को इनके माध्यम से खुश किया जा सके। जालिम के अच्छे कर्मों को उसके जुल्म के हिसाब से मजलूम के हिस्से में डाल दिये जायेंगे। जब उसका नाम-ए-आमाल नेकियों से खाली हो जायेगा और मजलूम का हक़ बाकी रहेगा तो मजलूम के गुनाह उसके सर पर डाल दिये जायेंगा। (बुखारी)

❑ जुल्म से बचो इसलिये कि जुल्म क्यामत के दिन अंधेरा बन कर आयेगा। (मुस्लिम)

❑ अपने भाई की मदद करो, चाहे वह जालिम हो या मजलूम। आप स०अ०व० से पूछा गया, जालिम की मदद कैसे की जाये। फरमाया कि उसको जुल्म करने से रोकना ही उसकी मदद है। (बुखारी-मुस्लिम)

❑ ऐ अबू ज़र! जब तुम्हारे घर सालन बनाया जाये तो उसमें पानी बढ़ा लिया करो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (मुस्लिम ४७५८)

❑ जो व्यक्ति अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे। (बुखारी ०५६७१)

❑ वह व्यक्ति जन्नत में नहीं जा सकता जिस की शरारतों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (मुस्लिम-६६)

❑ एक बार मुहम्मद

स०अ०व० ने तीन बार यह वाक्य सुनाया अल्लाह की कसम वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जिसके दुख से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (बुखारी-५५५७)

❑ अल्लाह के नजदीक साथियों में सबसे बेहतर साथी वह है जो अपने साथी के हक़ में बेहतर हो और सबसे अच्छा पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के हक़ में बेहतर हो। (तिर्मिज़ी-१८६८)

❑ जिसे यह पसन्द हो कि अल्लाह और उसके रसूल उससे मुहब्बत करें तो उसे चाहिये कि वह हमेशा सच बोले और जब किसी मामले पर उस पर भरोसा किया जाये तो वह अपने इमानतदार होने का सुबूत दे और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करे (बैहकी १५०२)

❑ हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमायाः कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जब भी मेरे पास आते तो मुझे पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने पर इतना ज़ोर देते थे कि मुझे ऐसा लगने लगता था कि वह वरासत में पड़ोसी को हिस्सेदार बना देंगे। (बुखारी-५५५५)

❑ तुममें सब से बेहतर वह है जिसके जरिये से दूसरे इन्सानों को सबसे ज़्यादा भाइदा पहुंचे।

❑ भ्रम से बचो, क्योंकि वह बदतरीन झूठ है, दूसरों की टोह में न लगे रहो, दलाली न करो, साजिश न करो, एक दूसरे के खिलाफ डाह न रखो और अल्लाह के बन्दे बनकर भाई भाई की हैसियत से रहो। (मुस्नद अहमद २८७/२)

❑ रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है रिश्ता नाता कहता है कि जो मुझे जोड़े गा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से जोड़ेगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से काट देगा। (बुखारी१४७/१)

❑ रिश्ता-नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा। (बुखारी)

❑ अल्लाह तआला ने रिश्तेदारी को खिताब करते हुये फरमाया क्या तू उससे खुश नहीं है कि जिसने तुझे मिलाया मैं उसे जन्नत से मिलाऊं और जिसने तुझे काटा मैं उसे (जन्नत से) काट दूं। (बुखारी)

❑ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आकर पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कोई ऐसा काम बता दिजिये, जिसको करने से मैं जन्नत में चला जाऊं। मुहम्मद स०अ०व०ने फरमायाः अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, नमाज़ काइम करो, जकात दो, और रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। (बुखारी-मस्लिम)

❑ जिस व्यक्ति का अल्लाह पर ईमान हो तो उसे अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाता जोड़े रखना चाहिये। (बुखारी)

❑ पैगम्बर मुहममद स०अ०व०ने फरमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद (धूल धूसरित) हो। उस शख्स की नाम खाक आलूद हो उस शख्स की नाक (धूल ध् ूसरित) हो रसूल स०अ०व०से सहाबए किराम ने सवाल किया ऐ अल्लाह के रसूल किसकी नाक खाक आलूद हो? तो आप स०अ०व० ने जवाब दिया उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिसने अपने माता पिता को बुढ़ापे की अवस्था में पाया हो फिर उनकी खिदमत करके जन्नत में नहीं गया। (बुखारी)

❑ ❑ ❑

पानी महान नेमत

अबू हमदान अशरफ फ़ैज़ी

यह हकीक़त है कि इन्सान, दूसरे जानदार और पेड़ पौधों सब के जीवन की निर्भरता पानी पर है। पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

'' और हर जीवित चीज़ को हम ने पानी से पैदा किया क्या यह लोग फिर भी ईमान नहीं लाते।'' (सूरे अंबिया-३०)

पवित्र क़ुरआन में दूसरी जगह फरमायाः ''तमाम के तमाम चलने फिरने वाले जानदारों को अल्लाह तआला ने पानी से पैदा किया है।'' (सूरे नूरः४५)

पानी से अल्लाह तआला जमीन से अनाज, गल्ला घास पौधे और हर प्रकार के फल पैदा करता है जिस में इन्सानों और जानवरों के लिये बहुत से फायदे हैं। पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला ने पानी से होने के फायदे को विभिन्न स्थानों पर उल्लेख किया है। फरमायाः

''और हमने आस्मान से बरकत वाला पानी बरसाया और इससे बागात और कटने वाले खेत के गल्ले पैदा किये और खुजूरों के बुलन्द पेड़ जिन के खोशे (गुच्छे) हैं। बन्दों की रोज़ी के लिये और हमने पानी से मुर्दा शहर को जीवित कर दिया इस तरह (क़ब्रों) से निकलना है।'' (सूरे क़ाफ़)

फरमायाः ''इन्सान को चाहिए कि अपने खाने को देखे कि हमने खूब पानी बरसाया फिर फाड़ा जमीन को अच्छी तरह से फिस इसमें से अनाज उगाये और अंगूर, तरकारी, जैतून, खुजूर, घने बागात, फल और (घास) चारा भी (उगाया) तुम्हारे प्रयोग और लाभ के लिये और तुम्हारे चौपायों के लिये। (सूरे अबसः ३२-३४)

फरमायाः ''वही तुम्हारे फायदे के लिये आकाश से पानी बरसाता है जिसे तुम पीते हो और इसी से उगे हुए पेड़ों को तुम अपने जानवरों को चराते हो। इसी से वह तुम्हारे लिये खेती, जैतून, खुजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल उगाता है, निसन्देह उन लोगों के लिये तो इसमें बड़ी निशानी है जो गौर व फिक्र करते हैं'' (सूरे नह्ल १०-११)

इसी तरह पानी वह महान नेमत है जिस को अल्लाह ने बन्दों पर उपकार के तौर पर बयान कियाः ऐ लोगो अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया यही तुम्हारा बचाव है जिसने तुम्हारे लिये जमीन को फर्श और आस्मान को छत बनाया और आस्मान से पानी उतार कर उससे फल पैदा करके तुम्हें रोज़ी दी'' (सूरे बक़रा-२१-२२)

पानी की अहमियत का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पानी जिस तरह दुनिया में ज़रूरत है उसी तरह मरने के बाद वाली जिन्दगी में भी ज़रूरत है जैसा कि अल्लाह तआला ने परलोक में जन्नतियों के लिये जिन नेमतों (सुखसामग्री) का उल्लेख किया है इन में पानी की भी सुखसामग्री

शामिल है। पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

उस जन्नत की मिसाल जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है, यह है कि इस में पानी की नहरे हैं जो बदबू करने वाला नहीं हैं'' (सूरे मुहम्मद-१)

और नरक में रहने वालों को इस पानी से वंचित रखा जायेगा जैसा कि पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''और नरक वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमारे ऊपर थोड़ा पानी ही डाल दो या और ही कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम को दे रखा है। जन्नत वाले कहेंग कि अल्लाह तआला ने दोनों चीज़ों को काफ़िरों के लिये बन्दिश कर दी है।'' (सूरे आराफ-५०)

पानी अल्लाह की महान नेमत के साथ उसके सर्वशक्तिमान होने की निशानी है, इसकी कद्र करना हमारी जिम्मेदारी है। अल्लाह तआला परलय के दिन अन्य नेमतों की तरह इस नेमत के बारे में भी सवाल करेगा सवाल करने का अर्थ यह है कि मेरे बन्दे ने पानी का सहीह रूप से प्रयोग किया या नहीं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

परलय के दिन सबसे पहले बन्दे से जिन नेमतों के बारे में सवाल किया जायेगा वह यह हैः उससे कहा जायेगा क्या मैं ने तुम्हारे शरीर को सेहतमन्द नहीं बनाया और तुम्हें ठण्डा पानी नहीं पिलाता रहा? (तिर्मिज़ी ३३-३८)

यही वजह है कि इस्लाम ने पानी की हिफाज़त पर बहुत ज़ोर दिया है कि हर ऐतबार से पानी को फालतू खर्च करने से बचा जाये, लेकिन अफसोस है कि बहुत से लोग पानी को फालतू खर्च करते हैं। पानी की हिफाज़त का एक तरीका यह भी है कि किसी जगह ठहरे हुए पानी में पेशाब न किया जाये। अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ठहरे हुए पानी में पेशाब न करो (हदीस की किताब, सहीह मुस्लिम २८१)

ठहरे हुए पानी में पेशाब करने से इस लिये मना किया गया है कि इससे पानी गंदा हो जायेगा और लोग इसको प्रयोग नहीं कर पायेंगे।

निम्न तरीक़ा अपना करके भी पानी की हिफाज़त की जा सकती हैः

१. औरतें किचन में पानी को अनावश्यक न इस्तेमाल करें।

२. छोटे बच्चों को पानी की अहमियत को समझायें, ताकि उनके अन्दर पानी की हिफाज़त की आदत पैदा हो जाये।

३. कभी कभार नल से पानी लगातार टपकता रहता है, बाज लोग इस पर ध्यान नहीं देते और नल को ठीक नहीं करवाते और रसाव की वजह से बहुत सारा पानी यूं ही बर्बाद हो जाता है इसलिये नल को जल्द से जल्द ठीक करवाया जाये।

४. बाज लोग गाड़ी की धुलाई में जरूरत से ज्यादा पानी इस्तेमाल करते हैं इस पर कन्ट्रोल करने की ज़रूरत है।

५. वाटर फिलटर पलान्ट में पानी बहुत बबार्द होता है इस पानी को भी किसी जगह इस्तेमाल किया जा सकता है।

६. जनता के अन्दर जागरूकता पैदा की जाये, पानी की हिफाज़ल के लिये अभियान चलायें, गली मोहल्ले में पोस्टर लगा कर लोगों के अन्दर पानी कर्म खर्च करने की तरफ ध्यान दिलायें।

❑ ❑ ❑

खाने पीने के बारे में इस्लाम के निर्देश

सईदुर्रहमान सनाबिली

औंधे मुंह लेट कर खानाः

औंधे मुंह लेटकर खाना पीना भी ऐब है। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना फ़रमाया है कि आदमी औंधे मुंह लेट कर खाना खाए। (सुनन इब्ने माजाः ३३७० शैख़ अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इस हदीस को हसन क़रार दिया है)

औंधे मुंह हो कर सोना भी मना है क्योंकि इसमें जहन्नमियों जैसी ऊपमा है, वह जहन्नम में औंधे मुंह घसीट कर डाले जाएंगे जैसा कि कुरआन पाक में है। इस वजह से औंधे मुंह लेट कर खाने से मना किया गया है।

खड़ा होकर खाना जायज़ है

ऊपर की लाइनों में बयान किया गया है कि बेहतर यही है कि इंसान बैठकर खाना खाए लेकिन जहां तक खड़ा होकर खाने के दुरूस्त होने की बात है तो यह जायज़ है इसलिए अगर कोई शख्स खड़ा होकर खाना खाता है तो उसमें कोई पाप नहीं है। इसकी दलील अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वह कथन है जिसमें बयान करते हैं कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में चलते हुए खाते थे और खड़े होकर पानी पिया करते थे। (सुनन तिर्मिज़ीः १८८८०, सुनन इब्ने माजाः ३३०१, शैख अल्बानी रहिमहुल्लह ने इस हदीस के सहीह क़रार दिया है)

एक हदीस में आता है कि अनस रज़ियल्लाहु अन्हू ने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खड़ा होकर पानी पीने से मना किया है। क़तादा सदूसी रहिमहुल्लाह कहते हैं कि हमने पूछा कि खड़ होकर खाना कैसा है? अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहाः वह तो और ज़्यादा संगीन है। (सहीह मुस्लिमः २०२४)

अब्दुल्लाह बिन उमर और अनस रज़ियल्लाहो अन्हुम की इस हदीस में कोई टकराव नहीं है क्योंकि खड़े होकर खाने को संगीन अनस रज़ियल्लाहो अन्हु ने अपने ज्ञान और समझ के एतबार से कही है और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने का अमल बताया है। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बयान तक़रीरी हदीस की श्रेणी में आएगा और वह हमारे लिए दलील है जबकि अनस रज़ियल्लाहो अन्हु का फ़तवा उनकी अपनी निजी रय है।

खड़े होकर पानी पीना जायज़ नहीं:

खड़े होकर पानी पीना हराम है। इस बारे में अधिकतर ओलमा का कहना है कि खड़ा होकर पानी पीना जायज़ है लेकिन यह दष्टिकोण सहीह नहीं है क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खड़ा होकर पानी पीने से सख्ती से रोका है बल्कि कुछ हदीसों में

यहां तक कहा है कि अगर कोई भूल कर भी खड़े होकर पानी पी ले तो उसे चाहिए कि उल्टी कर दे। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बयान फरमायाः

''तुम में से कोई भी श्ख्स खड़े होकर हरगिज़ पानी न पिए, अगर कोई भूल कर खड़े होकर पानी पी ले तो उसको चाहिए कि उसे उल्टी करे दे। (सहीह मुस्लिम २०२६)

इसी तरह अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर पानी पीने से रोका है। (सहीह मुस्लिम २०२४, २०२५)

इन हदीसों से मालूम होता है कि खड़े होकर पानी पीना हराम है और इससे बचना चाहिए। हां कुछ रिवायतें में आता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर पानी पिया, इससे खड़े होकर पानी पीने की वैधता पर दलील स्थापित करना दुरूस्त नहीं है। इस वजह से कि या तो वह विशेष पानी से संबन्धित या विशेष वाक्यात से संबन्धित है या फिर वह साबित ही नहीं है। कुछ सहाबा किराम ने जो स्पष्ट रूप से कहा है कि मैंने खड़े होकर पानी पिया ताकि तुम देख सको कि यह जायज़ है। यह उनकी सूझबूझ और राय है और सहाबा किराम की राय जब सहीह और स्पष्ट हदीस के विपरीत और विरूद्ध हे तो हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस क़बूल करेंगे।

इसी तरह अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा से बयान की गई हदीस से हमने खड़े होकर खाने की वैधता की बात तो कही लेकिन खड़े होकर पानी पीने की वैधता की बात नहीं कही, इस वजहसे कि खड़ा होकर पानी पीने की अवैधता दूसरी हदीसों से साबित हो रही है।

जबकि खड़े होकर खाने की मनाही किसी मरफूअ हदीस से साबित नहीं है तो सैद्धांतिक नियम के तहत इसे जायज़ क़रार दिया जाएगा और दलील होने की वजह से खड़े होकर पानी पीने को हराम कहा जाए।

खाने के दौरान बातचीत करना

खाने के दैरान जायज़ बातचीत करने में कोई पाप नहीं है। कुछ लोग खाते वक़्त बातचीत बल्कि सलाम का जवाब तक देने को ऐब मानते हैं और कहते हैं कि खाने के दौरान सलाम करना या बातचीत करना दुरूस्त नहीं है जबकि शरीअत में इसकी कोई बुनियाद नहीं है। इसके विपरीत हदीसों से साबित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खाने के दौरान बातचीत की है। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में गोश्त परोसा गया। आपके सामने हाथ के हिस्से का गोश्त रख गया जो आपको बेहद पसंद था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे एक बार नोच कर खाया और फरमायाः

मैं क़यामत के दिन सारे लोगों का सरदार रहूंगा और क्या तुम्हें पता है कि ऐसा क्यों होगा (सहीह बुखरी ३३४०, सहीह मुस्लिम १९४१)

इसी तरह जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लहो अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने घर वालों से

सालन के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि घर में सिरका के सिवा कुछ नहीं हैं आपने इसे ही लाने के लिए कहा, इसे खा रहे थे और कह रहे थे कि सिरका कितना अच्छा सालन है, सिरका कितना अच्छा सालन है। (सहीह मुस्लिम २०५२)

यह और इन जैसी हदीसों से यह बात स्पष्ट होती है कि खाने के बीच बात चीत जायज़ है और जो लोग कहते हैं कि खाना खाने के बीच बात करना और सलाम करना दुरूस्त नहीं है उनकी बात दुरूस्त नहीं है।

अपने सामने से और प्लेट के किनारे से खाना चाहिए

खाने के दौरान एक अहम शिष्टाचार यह है कि जब कोई खाना खाए तो अपने सामने की चीजों को खाए। यह ऐब की बात है कि दूसरों के सामने से खाया जाए या बीच प्लेट से खाना शुरू कर दिया जाए। उमर बिन सलमा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन पोषण में था, मेरा हाथ खाने के बर्तन में इधर-उधर घूमता फिरता था। यह देखकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमाया ऐ बच्चे बिस्मिल्लाह पढ़ो, अपने दाएं हाथ से खाओ और जो तुम्हारे करीब हो उसमें से खाओ। (सहीह बुखारी, ३५७६, सहीह मुस्लिः २०२२)

इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हम जब भी खाना खाएं तो अपने सामने से खाएं और अकारण दूसरों के सामने हाथ बढ़ाकर उसके सामने मौजूद चीज़ों को लेने की कोशिश ना करें क्योंकि यह ऐब समझा जाता है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इससे मना किया है।

इससे संबंधित एक सुन्नत यह भी है कि जब खाएं तो हम प्लेट के किनारे से खाएं और प्लेट के बीच से खाना ना शुरू करें क्योंकि बरकतें खाने के दरमियान में आती हैं। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''बरकत खाने के बीच में अवतरित होती है इसलिए खाने के किनारों से खाओ और बीच से ना खाओ'' (सुनन तिर्मिज़ी १८०५, सुनन इब्ने माजा ३२७७, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहुल जामेअ ८२६ में इसे सहीह क़रार दिया है)

बिस्मिल्लाह कहकर इसके किनारों से खाओ और इसके निचले हिस्से को छोड़ दो इसलिए की बरकत उसके ऊपर वाले हिस्से से ही आती है। (सुनन इब्ने माजा ३२७६, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने सहीह इब्ने माजा में इसे सहीह क़रार दिया है)

इन हदीसों से मालूम होता है कि जब कोई खाना खाये तो बर्तन के किनारे से खाना चाहिए लेकिन अगर कई प्रकार के पकवान हैं तो दूसरे पकवानों को खाने के लिए अपने सामने के अलावा भी हाथ आगे ले जा सकते हैं एक दर्जी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दावत दी। उसने आपके लिए खाना तैयार किया। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था। उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जौ की रोटी और शोरबा परोसा जिसमें कद्दू और गोश्त के

टुकड़े थे। अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि मैंने देखा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बर्तन के किनारों से कद्दू तलाश करके खा रहे थे। उसी दिन से मैं भी कद्दू को बहुत पसंद करने लगा। (सहीह बुखारी:५४३९)

तीन उंगलियां से खाना

खाने का एक शिष्टाचार (अदब) यह भी है कि जब कोई खाना खाए तो तीन उंगलियों से खाए। काअ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीन उंगलियों से खाया करते थे और पोछने से पहले अपने हाथ को चाटा करते थे। (सहीह मुस्लिम २०३२)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही तरीक़ा था कि आप तीन उंगलियों से खाया करते थे और खाने में तीन उंगलियों का इस्तमाल करना ही सुन्नत है। तीन उंगलियों से खाने का फायदा यह है कि कोई ज़्यादा नहीं खाएगा। बल्कि वह उतना ही खायेगा जो उसके लिए ज़रूरी होगा। हां, यहां एक बात याद रखनी चाहिए कि जिन चीज़ों को हम तीन उंगलियों से नहीं खा सकते हैं उनमें तीन से अत्यधिक उंगलियों का इस्तेमाल जायज़ होगा जैसा कि अल्लामा इब्ने उसैमीन रहिमाहुल्लाह वगैरा ने कहा है। (अश्शरहुल मुमता)

चम्मच से खाना खाना

चम्मच से खाने में कोई पाप नहीं है क्योंकि इसके अवैध होने की कोई दलील नहीं है लेकिन कुछ लोगों ने चम्मच से खाने को हराम क़रार दिया है और कहा है कि इससे यहूदियों और ईसाइयों से समानता हो जाती है जबकि यह बात दुरूस्त नहीं है इस वजह से कि चम्मच से खाना यहूदियों और ईसाईयों की पहचान नहीं है कि इस बारे में हम उनका विरोध करें और चम्मच से खाने से परहेज़ करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीन उंगलियों से खाया करते थे और इसका मक़सद यह होता था कि इंसान केवल ज़रूरत भर खाना खाए और चम्मच से खाने में भी यह चीज़ पाई जाती है कि कोई बहुत ज़्यादा नहीं खा सकेगा तो इस बुनियाद पर पांच उंगलियों से खाने से बेहतर होगा कि खाने में चम्मच इस्तेमाल किया जाए।

शैख अल्बानी रहिमाहुल्लाह, आप के शिष्य शैख मशहूर हसन, शैख इब्ने उसैमीन ने चम्मच से खाना की वैधाता का फवता दिया है और हमूद तुवैजरी रहिमाहुल्लाह वगैरा के दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं किया है जिन्होंने चम्मच से खाने को यहूदियों और ईसाइयों से समानता के आधार पर अवैध (हराम) क़रार दिया है।

बर्तन साफ़ करके खाना और खाने के बाद उंगलियों को चाटना

खाना खाने के बाद उंगलियों को चाटना चाहिए। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खाना खाने के बाद अपनी उंगलियों को चाटा करते थे। (सहीह मुस्लिम २०३४)

इस तरह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें शिक्षा दी है कि खाना खाने के बाद अपनी उंगलियों को चाट लिया जाए क्योंकि हमें नहीं मालूम कि खाने के किस हिस्से में बरकत है, हो सकता है कि उंगलियों में खाने का जो हिस्सा लगा हुआ है उसी में बरकत

हो इसलिए हमें खाना खाने के बाद अपनी उंगलियों को चाटना चाहिए। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ‘‘जब तुम में से कोई खाना खा चुके तो अपने हाथों को चूसने से पहले न धोएं क्योंकि उसे नहीं मालूम कि खाने के किस हिस्से में बरकत दी जाएगी।’’ (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा-२४८३४)

एक दूसरी हदीस में है कि खाने के बाद अपने हाथ को उस वक़्त तक न पोछें जब तक कि उसे चाट ना लें या अपने बीवी बच्चों को न चटवा दें। अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई खाना खाए तो अपने हाथ को उस वक़्त तक न पोछे जब तक वह उसे चाट ना ले या चटवा न दे। (सहीह मुस्लिम २०३१)

खाने के बाद उंगलियों को चाटना कितना लाभदायक है इसका अंदाज़ा आप इस बात से लगा सकते हैं कि आधुनिक मेडिकल साइंस ने इसकी अपयोगिता को आज स्वीकार किया है जबकि इसका हुक्म इस्लाम के अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने १४ शताब्दी पहले दिया था औ इसमें जो बुद्धिमत्ता और हिकमत है इसकी पुष्टि मेडिकल वैज्ञानिक भी इस दौर में कर रहे हैं। इस संबंध में आप एक खबर पढ़िए, जर्मनी के कुशल डाक्टर ने शोध के बाद यह परिणाम निकाला है कि इंसान की उंगलियों की पोरों में मौजूद विशेष प्रकार की प्रोटीन उसे लूज मोशन, उल्टी और हैजे जैसी बीमारियों से बचाती हैं। माहिरों के अनुसार वह बैक्टीरिया जिन्हें ईकोलाई कहते हैं उंगलियों की पोरों पर मौजूद प्रोटीन इन हानिकारक बैक्टीरिया को मार देती हैं। इस तरह यह बैक्टीरिया मानव शरीर पर रहकर हानिकारक प्रभाव डालते हैं, विशेष रूप से जब इंसान को पसीना आता है तो बैक्टीरिया (कीटाणुओं) को मारने वाले प्रोटीन सक्रिय हो जाते हैं। माहिरीन का कहना है कि अगर यह प्रोटीन ना होते तो बच्चों में हैजे, लूज़ मोशन और उल्टी जैसी बीमारियां बहुत ज़्यादा होतीं। (दैनिक नवा-ए-वक्त ३ जून २००५)

❑ ❑ ❑

(प्रेस रिलीज़)

मुहर्रमुल हराम १४४६ हिजरी का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, ६ जुलाई २०२४

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ‘‘मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली’’ से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ ज़िलहिज्जा १४४५ हिजरी अर्थात ६ जुलाई २०२४ शनिवार को मग़्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ‘‘मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली’’ की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और मुहर्रमुल हराम के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक ७ जुलाई २०२४ रविवार के दिन मुहर्रमुल हराम पहली तारीख होगी।

पर्यावरण की शिक्षा के उद्देश्य

वकील परवेज़
कोषाध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस, हिन्द

पर्यावरण विदों ने काफी विचार के बाद पर्यावरण की शिक्षा के निम्न उद्देश्य बताये हैं:

१. प्राकृतिक व्यवस्था की हक़ीक़त और उसके क्रिया को जानदार जगत के साथ आपसी संबन्धा के बारे में ज्ञान उपलब्ध कराना।

२. इन्सान, जानवर, वनस्पतियों से संबिन्धित यह आभास पैदा करना कि यह भी प्रकृति की देन है और इनका एक दूसरे पर निर्भरता है।

३. प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार जीवन यापन के लिये इन्सान की उपलब्धियों के बेहतरीन कारनामों (कीर्ति) का प्रोत्साहन करना।

४. जनता में जागरूकता पैदा करना ताकि वह प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार जीवन गुज़ारने के अभ्यस्त हो जायें।

५. स्थानीय वातावरण, इस भूमण्डल के वातावरण को जो कुछ भी देता है इसको स्वीकार करना।

६. व्यक्तिगत विकास और स्थानीय वातावरण के आपसी रिश्तों का अध्ययन करना।

७. वातावरण और भू उपग्रह के तमाम जानदार के कल्याण के लिये अपनी जिम्मेदारी को महसूस करना।

८. स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण में शिर्कत और व्यक्तगत विकास संबन्धित उच्च शिक्षा का आधार रखना।

९. वातावरण और उसके प्रदूषण से संबन्धित जनता में जागरूकता पैदा करना

१०. जनता विशेष रूप से क्षात्रों में वातावरण के स्थित्व और सुरक्षा से संबन्धित ज्ञान उपलब्ध करना और यह आभास दिलाना कि ऐसा माहौल पैदा करने से बचें जो हमारे वातावरण को प्रदूषित करते हैं।

११. पर्यावरणीय मामलात के लिये निजी कार्यविधि प्रयोग करने का एहसास पैदा करना।

तयम्मुम

तयम्मुम वास्तव में वुजू का बदल है। अर्थात यदि पानी न हो या किसी कारण पानी इस्तेमाल न किया जा सकता हो तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी जा सकती है। जैसा कि कुरआन में एक स्थान पर आया है– यदि बीमार हो या यात्रा में हो या तुम में से कोई शौच करके आया हो या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो (अर्थात उनसे संभोग किया हो) फिर पानी न पाओ तो स्वच्छ मिटटी से अपने मुंह और हाथों पर 'मस्ह' कर लो, अल्लाह तुम्हें तंगी में नहीं डालना चाहता। (सूरा-५, अल-माइदा, आयत-६)

हदीसों में तयम्मुम की जो व्याख्या आई है उससे पता चलता है कि एक बार पाक मिटटी पर हाथ मारे और उसे मुंह और हाथ पर फेर ले। जैसा कि कुरआन की उपयुक्त आयत से स्पष्ट होता है इस तयम्मुम से वैसे ही नमाज़ पढ़ी जाएगी जिस प्रकार वुजू से पढ़ी जाती है।

(कुरआन की इन्साइक्लोपीडिया से)

दुआ का फल

मुहम्मद अज़्मतुल्लाह मुहम्मदी

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स दिन भर में सौ बार यह दुआ ''ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को व लहुल हम्मदो वहुवा अला कुल्ली शैइन क़दीर'' अर्थात नहीं है कोई सच्चा माबूद सिवा अल्लाह के वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी के लिये बादशाहत है और उसी के लिये सारी प्रशंसा है और वह सर्वशक्तिमान है'' पढ़ेगा तो उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उसके लिये सौ नेकियां लिखी जायें गी और सौ बुराइयां उससे मिटा दी जायेंगी, दिन भर शैतान से महफूज रहे गा यहां तक कि शाम हो जाये और कोई शख्स इससे बेहतर अमल लेकर नहीं आयेगा मगर जो इस से भी ज़्यादा यह कलिमा (वाक्या सूत्र) पढ़ ले।

इस दुआ में एक अल्लाह की इबादत और उसके साथ शिर्क न करने की शिक्षा दी गयी है औ इस दुआ में केवल अल्लाह की बादशाहत को दर्शाया गया है।

इस दुआ की विशेषता बयान करते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अरफा के दिन की दुआ तमाम दुआओं से बेहतर है और सबसे अफज़ल कलिमा जो मैंने और मुझसे पहले सभी पैगम्बरों ने की वह यही दुआ ''लाइलाहा इल्लल्लहो वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को वलहुल हमदो वहुवा अला कुल्ली शैइन कदीर'' है।

इस दुआ के पढ़ने से सौ गुलाम आज़ाद करके गुलामी से छुटकारा दिलाने की प्रेरण दी गयी है। एक रिवायत में हैः ''जिस शख्स ने भी किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद किया तो अल्लाह तआला इस गुलाम के शरीर के हर अंग के बदले उस शख्स के शरीर के भी एक एक अंग को नरक से आज़ाद करेगा''। (सहीह बुखारी २५१७)

नेकी चाहे छोटी हो या बड़ी क्यामत के दिन वह ज़रूर काम आयेगी शर्त यह है कि इन नेकियों को बर्बाद करने वाले कर्म से बचा जाये इस लिये किसी भी नेकी को मामूली नहीं समझना चाहिए।

कुरआन व हदीस में गुनाह को मिटा देने वाले बहुत से कर्मों का उल्लेख है लेकिन इस दुआ को पढ़ने से सौ गुनाह मिटा दिये जाते हैं।

गुनाह दो प्रकार के होते हैं छोटे पाप महा पाप। महा पाप बिना तौबा के मआफ नहीं होते हैं लेकिन छोटे-छोटे पाप नेक आमाल से मआफ हो जाते हैं। जैसा कि कुरआन में है कि निःसन्देह नेकियां गुनाहों को मिटा देती हैं। उपर्युक्त दुआ पढ़ने से इन्सान दिन भर शैतान से सुरक्षित हो जाता है। अल्लाह से दुआ है कि वह सभी लोगों को इस दुआ और अन्य दुआलों को पढ़ने की क्षमता दे।

समय का महत्व

फ़ैज़ान यूसुफ़ अस्री

अल्लाह ने हम इन्सानों को इतनी नेमतें ही हैं कि हल इनको गिन नहीं सकते पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो इसे गिन नहीं सकते बेशक अल्लाह बहुत मआफ करने वाला कृपालू है'' (सूरे नह्ल-१८)

कुरआन और हदीस में वक़्त की अहमियत को कई पहलुओं से बयान किया गया है। पवित्र कुरआन में अल्लाह ने कई स्थानों पर समय की सौगन्ध खाई है जैसे कि सूरे अस्र में है

''क़सम है ज़माने की निसन्देह इन्सान ख़सारे में है''

एक रिवायत में है जिस से समय की अहमियत का पता चलता है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अगर क्यामत आ जाये और तुम में से किसी के हाथ में कोई छोटा सा पौदा हो जिसे वह ज़मीन में लगाना चाहता है तो इस हाल में भी अगर उसके लिये संभव हो तो ज़रूर लगा देना चाहिए'' (मुस्नद अहमद १६६०२, अल अदबुल मुफरद)

इस हदीस से मालूम होता है कि अगर किसी को नेक काम करने के लिये थोड़ा सा भी वक़्त मिल जाये तो उसे इस वक़्त को गनीमत समझते हुए इस काम को करना चाहिए।

एक हदीस में समय को नेमत क़रार दिया गया है।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैंः

''दो नेमतें ऐसी हैं जिन में अधिकतर लोग अपना नुक्सान करते हैं एक सेहत और दूसरे खाली वक़्त।

इस हदीस में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि लोग अपनी तन्दुरुस्ती के दिनों का ख्याल नहीं करते, तन्दुरुस्ती का वक़्त समाप्त हो जाता है तो अफसोस और पछतावे का इज़हार करते हैं।

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि अगर यह वक़्त निकल गया और यूं ही बर्बाद हो गया तो फिर दुबारा वापस नहीं होगा। इस लिये अल्लाह ने वक़्त की जो नेमत दी है इस से फायदा उठाओ।

अफसोस है कि हमारे पूर्वजों के यहां वक़्त की जितनी क़द्र थी वह हमारे अन्दर नहीं है।

इमाम राज़ी रह० के बारे में उल्लेख किया गया है कि उनके नज़दीक वक्त की इतनी अहमियत थी कि वह कहते थे कि खाने के वक़्त क्यों ज्ञान की प्राप्ति से खाली जाता है।

एक जगह लिखते हैं कि अल्लाह की क़सम मुझे खाने के वक़्त ज्ञानात्मक व्यस्तता के छूट जाने पर अफसोस होता है क्योंकि वक़्त बहुत कीमती चीज़ है।

इमाम जौज़ी रह० फरमाते हैं कि तुम्हें वक़्त की हिफाज़त का जिम्मेदार बनाया गया है लेकिन मैं देख रहा हूं कि यही वह चीज़ है जो तुम्हारे पास बहुत आसानी से बर्बाद हो रहा है। (ाजरातुज जहब ६/३२६)

सोशल मीडिया का सहीह स्तेमाल

नौशाद अहमद

सोशल मीडिया अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, अपनी बात को बहुत ही कम वक़्त में दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक आसानी से पहुँचाई जा सकती है, इस तरह अगर देखा जाए तो सोशल मीडिया अपने विचार के प्रसार व प्रचार के लिये एक बहुत बड़ी नेमत ही नहीं बल्कि बहुमूल्य माध्यम है लेकिन यह कितने अफसोस की बात है कि हम में कुछ लोगों ने इस को महज़ वक़्त पास करने का एक खिलौना बना लिया है और इन सोशल साइटों पर ऐसे लोगों की भरमाड़ है जो जानते कम हैं लेकिन नाम कमाने के चक्कर में ऐसा काम कर जाते हैं जो पूरे समुदाय और खुद उसके धर्म के लिये अपमान का कारण बन जाता है। देखा जाता है कि मामूली मसलों में बहुत से लोग कुछ न कुछ टिप्पणी कर ही देते हैं जबकि हर खबर पर टिप्पणी या अपने विचार व्यक्त करना जरूरी नहीं होता है लेकिन यह अज्ञानता ही का नतीजा है कि ऐसे लोग अपमान का कारण बन जाते हैं जब कि बहुत सी खबर और मजमून (लेख) ऐसे होते हैं जिनके बारे में इन्तेजार करना चाहिए और तुरन्त टिप्पणी देने से परहेज़ करना चाहिए। इसलिये कि थोड़ी सी लापरवाही और चूक से मामला कहां से कहां तक पहुंच जाता है।

महज़ कुछ लोगों की नादानी की वजह से एक छोटी खबर बड़ी खबर बन जाती है और एक बड़ी व महत्वपूर्ण खबर छोटी बन जाती है।

किसी भी खबर के अनेकों और विभिन्न पहलू होते हैं, जिन पर हर प्रकार से विचार करने के साथ उसका आकलन करना चाहिए। हम लोगों की सबसे बड़ी कोताही और कमजोरी यह है कि हम लोग खबरों की गहराई में नहीं जाते हैं और न छान बीन की ज़रूरत महसूस करते हैं। सोशल मीडिया खबरों की बारीकियों को समझ कर हिकमत से जवाब देना उसका सब से बड़ा सदउपयोग है जो लोग केवल फोटो वगैरा शियर करते और अपना फोटो वगैरह लोड करते हैं उनके लिये केवल वक़्त की बर्बादी है।

सोशल मीडिया को उपयोगी बनाने के लिये एक सकारात्मक मकसद होना चाहिए, अपने धर्म के प्रचार का लक्ष्य होना चाहिए, जो हमारे खिलाफ गलत प्रोपैगण्डा किया जाता है उसका सटीक जवाब देने के मकसद से स्तेमाल होना चाहिए यह सब मकसद नहीं पाया जाता हो तो यह समझ लेना चाहिए कि हम सोशल मीडिया पर अपना वक़्त बर्बाद कर रहे हैं और एक बड़ी नेमत के सहीह स्तेमाल से वंचित हैं। ज़रूरत है कि हम सोशल मीडिया की अहमियत को समझें और उसका सहीह स्तेमाल करें और हर अच्छे काम पर अभी से अमल करना शुरू कर दें कल का इन्तेजार न करें।

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''फअ़्तबिरू या ऊलिल अबसार'' ''पस ऐ आखों वालो इबरत हासिल करो''।

❑ ❑ ❑

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के पिरणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध ा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता
असगर अली इमाम महदी सलफी
अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

JULY 2024
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

Paytm UPI

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पता:-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

Total Pages 28